पेरिस
२८ जून, २००६

संदेश संख्या – ६८

समाधि

समाधि (सम+अधिष्ठान) का अर्थ है समता की ऊर्जा में पूर्णरूपेण अधिष्ठित होना । शरीर की विभेदकारी चित्तवृत्ति में चाहना–पाना एवं अनुसरण–अनुकरण सतत चलता रहता है । परन्तु मनुष्य जीवन में समाधि परम प्रज्ञा की वह अवस्था है जब जीवन मन के चाहने–पाने एवं अनुसरण–अनुकरण के चंगुल से पूरी तरह मुक्त हो जाता है ।

समाधि, विभिन्न प्रकार के आत्म सम्मोहक चालों एवं आध्यात्मिक मंडी के ठगों द्वारा दिए जाने वाले नशीले–पदार्थों से उत्पन्न कृत्रिम–'कोमा' या 'मूर्च्छा' नहीं है । मूर्च्छा से लौटकर पाखण्डी लोगों द्वारा चालाकीपूर्ण एवं भ्रांतिपूर्ण बातें कही जाती हैं जिन्हें तथाकथित अध्यात्मिक खोजी भक्तिपूर्वक सुनते हैं । हमेशा द्वन्द्व में रहने वाले ये तथाकथित खोजी इन बातों को सुनकर विश्वास कर लेते हैं कि बहुत बड़े 'आध्यात्मिक सत्य' का उदघाटन हो गया है।

समाधि की अवस्था में चेतना में उद्दीपन एवं अनुक्रिया की एक गति हो जाती है क्योंकि तब विभेदकारी प्रक्रिया शान्त हो जाती है (यीशु कहते हैं : यह गतिशीलता और स्थिरता है) ।

समाधि जीवन है और मृत्यु भी है क्योंकि ये दो नहीं हैं । समाधि की अवस्था में जीवन और मृत्यु दोनों एक–दूसरे से अलग नहीं होते हैं । थकावट या निराशा की स्थिति में लिए गए निर्णय से समाधि घटित नहीं होती । अचेतन मन में स्थित समाधि की इच्छा से भी समाधि घटित नहीं होती । यह समय और दूरी की अवधारणा से परे की अवस्था है । यह समाधि जीवन का सार तत्व है और शरीर जब अपने दैनिक दायित्वों का निर्वहन करता है तब भी यह अवस्था बनी रह सकती है ।

समाधि कोई जादू नहीं है जो विभेदकारी चित्तवृत्ति द्वारा अपने आराम एवं काल्पनिक सुरक्षा के लिए की जाय । कुछ ऐसे ''स्वामी'' एवं ''हंस'' भी हैं जो उच्च मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद बहुत सारी मिठाइयाँ खा लेते हैं और समाधि में चले जाते हैं। और कुछ ऐसे तथाकथित 'प्रबोध' को प्राप्त लोग भी हैं जो समाधि के लिए 'चीलम' पीते हैं । समाधि अद्‌भुत तीव्रता के साथ घटित होती है और अनन्तिम रूप से घटित होती है । इसका कोई विकल्प भी नहीं है । यह केवल क्रिया के कारण नहीं घटित होती बल्कि इसके बावजूद भी घटित हो सकती है। इसके लिए ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे तुम्हें (मन को) करने की जरूरत है या नहीं करने की जरूरत है । समाधि पूर्णरूपेण स्वायत्त है । यह किसी के भी आदेश के अधीन नहीं । कोई भी सृष्टि (सृजन) तब तक सम्भव नहीं है जब तक विभेदकारी चित्तवृत्ति द्वारा अपने आत्मकेन्द्रित अस्तित्व को बचाये रखने के लिए बनाये गए भ्रांतिमूलक संसार का, समाधि द्वारा नाश नहीं हो जाता। यह समाधि यथार्थ को ढँकने का एवं छिपाने का कोई आवरण नहीं है। जीवन को जानने के लिए समाधि परमावश्यक है। समाधि से ही दर्शन हो सकता है । सभी सद्‌गुण (सामाजिक नैतिकता एवं समाज में सम्मान पाने के गुण नहीं) इसी से उत्पन्न होते हैं । प्रेम का उदय समाधि घटित होने के बाद ही होता है। सच्चरित्रता की आधारशीला समाधि है । यह विभेदकारी चित्तवृत्ति से रहित परम शान्ति है । इसमें सभी अन्तों का भी अन्त हो जाता है । यह सृष्टि का आदि और अन्त दोनों है । समाधि की पुनरावृत्ति नहीं होती । यह हर बार नूतन होती है । समाधि में जो हुआ था उसकी स्मृति (याद) की पुनरावृत्ति हो सकती है । लेकिन समाधि की स्मृति समाधि नहीं होती। स्मृति तो मैं–पना है। बार–बार एक जैसे केवल प्लास्टिक फूलों का ही उत्पादन सम्भव है। वास्तविक फूल तो नित नूतन एवं नश्वर होते हैं।

विचार चाहे जो भी कर ले, समाधि नहीं ला सकता । विचारक के हस्तक्षेप से रहित अर्थात् बिना किसी प्रकार के पुरस्कार की आशा या सुरक्षा की प्रत्याशा के जब विचार अपने प्रति सजग होता है तो वह शान्त हो जाता है । ऐसा विचार जब अपनी सभी प्रकार की अव्यक्त एवं व्यक्त गतिविधियों को समझने लगता है तो उसका निर्विचार में विस्फोट हो जाता है । यही समाधि है, चैतन्य है और कृष्ण है । यह 'हरे कृष्ण'–सम्प्रदाय का कृष्ण नहीं है । चैतन्य रहित कृष्ण तो केवल आत्म–धोखा, आत्म–प्रवंचना और आत्म–सम्मोहन है ।

वर्तमान एवं समाधि के बीच कोई अंतराल नहीं होता । 'समयान्तराल' में कई मानसिक उपक्रम होते हैं । अतः उसमें समाधि नहीं हो सकती । समाधि निर्विकल्प की अवस्था है । समाधि की कोई दिशा नहीं । यदि दिशा है भी तो वह विकल्प की दिशा नहीं । सभी प्रकार के द्वन्द्व के परे की अवस्था है समाधि। यह ऐसा विस्फोट है, जो तर्क या गणना से परे है । समाधि की अवस्था में किए गए कार्य न तो अनुमानात्मक होते है और न ही तुलनात्मक। मानव संबंधों के प्रत्येक स्तर पर निर्द्वन्द्व होना ही समाधि का सारतत्व है ।

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः
गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।
भगवद्गीता (१५.५)
जय समाधि ।